बी० ए० पार्ट–1 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अतिथि व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

रीतिसिद्ध कवि बिहारी

हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा में बिहारी जी रीतिसिद्ध कवि के रूप में जाने जाते है। ये रीतिकाल के प्रतिनिधी कवि है। वे अपनी कविता में प्रेम चिन्नण के क्रम में दरबारी जरूरतों से रूबरू होते है। दरबारी संस्कृति ने उनके प्रेम को सुखवादी स्वरूप प्रदान किया है। यदि भक्त कवियों ने प्रेम का आध्यातमिकरण किया था तो बिहारी जी ने उसी प्रेम का दरबारीकरण किया है। लोकप्रियता की दृष्टि से तो बिहारी जी की '**बिहारी सतसई**' एक ही प्रतिद्वंद्वी जानती है और वह है **'रामचरितमानस'** ऐसे देखा जाय तो इसके पचासों टीकाएँ लिखी जा चुकी है। बिहारी माथुर चौबे थे। उनका जन्म ग्वालियर के पास बसुवा गोविंदपुर गाँव मे संवत् 1660 ई० के आसपास माना गया है। उनके पिता केशवदास भी एक छोटे–मोटे कवि थे।

ऐसे कहा जाता है कि बिहारी के एक दोहे ने जयपुर महाराजा जयसिंह को अपनी प्रजा की ओर किंकर्तव्य–विमूढ़ किया, अन्यथा वे तो अपनी छोटी रानी के प्रेम पाश में इस तरह डूबे हुए थे कि उन्हें अपनी प्रजा के सुख–दुःख का कुछ ख्याल ही नहीं था। पंक्तियाँ कुछ इस प्रकार है–'नहिँ पराग नहिँ मधुर मधु,

नहिँ विकास यहि काल,

अली कली ही सौं बँध्यों

आगे कौन हवाल।।'

जयपुर नरेश बिहारी को उनके प्रत्येक दोहे पर एक अशर्फी देते थे। इस तरह बिहारी ने **'सात सौ दोहे'** लिखें। दोहे के इस संग्रह को 'बिहारी सतसई' के नाम से जाना जाता है। बिहारी सतसई ऐसा एक मात्र काव्य है जिस पर सबसे अधिक टीकाएँ लिखी गई हैं।

पंडित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने लिखा है कि–'श्रृंगार रस के ग्रंथों में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ उतना और किसी का नहीं। इसका एक–एक दोहा हिन्दी साहित्य में एक–एक रत्न माना जाता है।•••••••••••••••••••• बिहारी ने इस सतसई के अतिरिक्त और कोई ग्रंथ नहीं लिखा। यहीं एक ग्रंथ उनकी इतनी बड़ी कीर्ति का आधार है।••••••••••••••••••मुक्तक कविता में जो गुण होना चाहिए, वह बिहारी के दोहों में अपने चरमउत्कर्ष को पहुंचा है। इसमें कोई संदेह नहीं ।••••••••••जिस कवि में कल्पना की समाहार शक्ति जितनी अधिक होगी उतनी ही वह मुक्तक की रचना में सफल होगा। यह क्षमता बिहारी में पूर्ण रूप से वर्तमान थी। इसी से वे दोहे ऐसे छोटे छंद में इतना रस भर सके हैं। इनके दोहे क्या हैं रस के छोटे–छोटे छीटें है।''बिहारी सतसई' के दोहे में थोड़े में बहुत कुछ कहने की अद्‌भूत क्षमता मिलती है। बिहारी जी ने स्वयं अपने 'सतसई' के बारे में कहते है–

' सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।

देखन में छोटन लगे, घाव करै गंभीर।'

बिहारी की नारी अट्‌हास करती मिलती है। वह कभी–कभी मर्दो को रोने पर विवश कर रहीं थी। बिहारी अपने समाज को खोलने के कोशिश कर रहे थे। पुरूष यौनाचार को देखने के लिए लालायित रहते थे। पुरूष प्रधान व्यवस्था भक्तिकाल में दिखायी पड़ती है, लेकिन बिहारी की नायिकाएँ विवाहेत्तर संबंध बनाने के कारण पुरूषों को रूलाने का काम करती है। इनके कविता में अंलकार के अलावा नायिकाएँ भी अलंकृत है। सामान्य नारियाँ भी विशिष्ट बनाकर चिन्नित किया जाता है। इनके यहाँ प्रकृति उद्दीपन का कार्य करती है, लेकिन प्रकृति को भी इस तरह के रूपों में उपमानों के जरिये सजाते है कि अब बरबस कह उठते है कि बिहारी प्रकृति के संचेतना के कवि है। यह प्रकृति उनके गहरे अनुराग को चिन्नित करती दिखायी पड़ती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य हैः–

'सुन्दर ओढ़े पीत पढ़ श्याम सलोने गात

मानों नील मनि शैल पर आतप पढ़यों प्रभात।'

इस कविता में अलंकार, रस, छंद, गुण वक्रोक्ति आदि का सभी दोहों में स्थान निरूपित किया गया है। यह गणितीय गढ़ने मस्तिष्क का काम है। यह मुक्तिबोध की हर पंक्ति में प्रतीक को खोलने जैसा प्रतीत होता है।

आचार्य शुक्ल ने कहा है–' कविता उनकी श्रृंगारी है पर प्रेम की उच्च भूमि पर नहीं पहुँचती।' यहाँ भी बिहारी की कविता पर प्रहार करते हुए आचार्य शुक्ल ऐहिक श्रृंगारी साहित्य पर ही प्रहार करते रहे है। यह सच है कि बिहारी की श्रृंगारिकता ऐहिकता का शिकार है । यदि वह जनजीवन को किसी हिस्से से जुड़ी भी है तो उसका स्वरूप काममूलक एवं सामंती परिवेश से जनीत है। जब भी श्रंगार सामंती तृष्णाओं का उपादान

बनकर आता है तो वह संकीर्ण दायरे में केन्द्रित होने के लिए बाध्य हो जाता है, लेकिन यहाँ कुछ हटकर यह बताना जरूरी है कि श्रृंगार ही बिहारी की कविता को विशिष्टिता का दंगा रेत है और यही उसकी कमजोरियों का कारण भी है। श्रृंगार कमोजरी वहाँ है, जहाँ वह काम मूलक है। जब श्रृंगार काम मूलक हो जाता है, काव्य प्रतिभा भी सामंती अभिरूचियों के गिरफ्त में आ जाता है। बिहारी के श्रंगार के मजबूरी यह है कि वह दरबारी संस्कृति में विकसित हुआ। बिहारी जिस आश्रयदाता के आश्रित थे, वह मुगल बादशाह था। इसलिए बिहारी एवं अन्य रीतिकालीन कवि दरबारियों के दरबारी थे। इस दोहरी दरबारी संस्कृति ने ही बिहारी के श्रृंगार का संर्कीण ऐहिकता का शिकार बनाया। उस समय के समाज में न तो जन आंदोलन था, न ही आध्यातमिक जागरण, इसलिए कविता के सामने संकीर्ण घेरे में बंघने के अलावा दूसरा रास्ता क्या था?

जिस आचार्य शुक्ल ने बिहारी के श्रृंगार की बार–बार सीमा बतायी है। उन्होंने ही बिहारी की प्रतिभा की प्रशंसा भी की है। उन्होंने लिखा है– **रीतिकाल के कवियों में बिहारी बड़े ही प्रगल एवं प्रतिभा सम्पन्न कवि थे। इसमें संदेह नहीं। इस काल के कवियों में इनका विशेष गौरव का स्थान है।''** इस बात को लेकर विवाद नहीं है कि बिहारी के प्रेम चिन्नण में आन्तरिकता एवं भाव विकास का अभाव है। इसमें भी दो राय नहीं कि बिहारी की कविता शब्दों की कारीगर एवं सजावट से पाठक को मुग्ध करती है। शुक्ल जी ने जो महीन बेलबुटे की बात की है, वह इसी अर्थ में है। बिहारी ने भावोन्मेष लाने की क्षमता नहीं है लेकिन शब्दों की नक्काशी द्वारा अर्थ चमत्कार पैदा करने की अद्‌भूत क्षमता है। उनमें उर्वर कल्पना शीलता है। इधर–उधर बिखरे हुए छोटे–छोटे भावों को इकट्ठा करने का काम उनकी कल्पना शक्ति करती है। 48 मान्नाओं के छोटे से छन्द दोहे में बिहारी असम्बद्ध से दिखते हुए भावों को भी एक सून्न में पीरोकर चन्द शब्दों में उसे सार्थक अभिव्यक्ति का रूप दे देते है। उन्हें **गागर मे सागर** भरने वाले कवि के रूप में सम्मान दिया जाता है। उसका कारण है कि उनकी कल्पना की समाहार शक्ति और भाषा की समाशक्ति। उनके इन दोनों गुणों की पत्ता उनके एक दोहे के विश्लेषण से पाया जा सकता है–बतरस लालच लाल की, मुरली धरि लुकाय।

सौह करे, भौहन हँसै, दैन कहै, नटि जाय।।

यह चिन्नण सरल, स्वभाविक एवं अहलादक है। यह संयोग श्रृंगार का एक उदाहरण है, इसमें कृष्ण आलम्बन है, गोपियाँ आश्रय है और गोपियों के हृदय में स्थायी भाव रति है। गोपियों की नाना प्रकार की चेष्टाएँ अनुभाव हैं । जैसेः– कसमें खाना (सौह करे), भौहों में मुस्कुरा देने को कहना और फिर इन्कार करना। भौहों के मुस्कुराहट में जो व्यजना है, सो अलग। उनकी मुस्कुराहट से उनकी आन्तरिक उल्लास, आनन्द की प्राप्ति की कामना एवं कृष्ण को छकाने का भाव ध्वनित होता है। 'भौहनि हसै' में मुस्कुराहट की बिम्बात्मक गतिशीलता लाक्षणिकता के कारण गोपियों के मन कई भावों को व्यंजित करने में समर्थ है।

बिहारी का मुक्तक काव्य सिर्फ श्रृंगार तक ही सीमित नहीं है। वह भक्ति एवं नीति जैसे विषयों को छुआ है। बिहारी की भक्ति उनके श्रंगार का ही विस्तार है। भक्ति चिन्नण में भी बिहारी अपने चमत्कारवाद से पीछा छुड़ा नहीं पाते। वे कही कृष्ण–राधा के मिलन में रंग चमत्कार देखते है तो कहीं वृन्दावन में उनके निम्नाकिंत दोहे श्रृंगार रस का माधुर्य रस में रूपान्तरण हुआ है। एक उदाहरण से देखा जा सकता है–

'या अनुरागी चित की गति समुझै नहि कोई,

ज्यों–ज्यों बुड़े श्याम रंग त्यों–त्यों उज्ज्वल होई।।'

यहाँ कवि इस आधार पर चमत्कार पैदा करता है कि जो व्यक्ति श्याम रंग में जितना डुबेगा, वह उतना ही उज्ज्वल होकर निकलेगा। श्याम रंग श्रृंगार का रंग है। उज्ज्वल रंग वैराग्य का। कवि कहना चाहता है कि जो कृष्ण की भक्ति में जितना डुबेगा उसमें उतना ही आध्यात्मिक उज्ज्चलता आयेगी। यहाँ लौकिक श्रृंगार के आलम्बन भी कृष्ण है तो माधुर्य रस के आलम्बन कृष्ण ही है। दोनों में विरोध नहीं है लेकिन श्याम रंग और उज्ज्वल रंग में विरोध होने के कारण जो विरोध का आभास हो रहा है इसलिए यहाँ विरोधाभास अलंकार है। कवि ने श्याम एवं उज्ज्वल रंग के वैषम्य के कारण विषम अलंकार की योजना की है।

नीतियाँ सुक्तिपरक होनी है। उसमें कवि कला चातुर्य का प्रयोग करते हुए समस्या का समाधान बताता है। बिहारी की सुक्तियाँ दरबारी अनुभव से पैदा हुई है, लेकिन वे सिर्फ दरबार की जरूरत भी बनती है। उनका नीति संबंधी दोहा को भी देखा जा सकता है–

'बढ़त–बढत सम्पति चलि, मन सरोज बढी जाय

घटत–घटत पुनि न घटै वरू समुल कुमलाय।'

निष्कर्ष कहा जा सकता है कि बिहारी जी ने अभिव्यक्ति के माध्यम से दोहों में एक चमत्कारिता को जन्म दिया। वे एक सच्चे कवि के रूप में हमारे सामने आते है। पूरे हिन्दी साहित्य में वह अकेले ऐसे कवि है। जिसने अनुभवों की समुपरिस्थिति से पूरे भाव के मंच पर शैलीगत अभिनय का विधान किया है। **'हजारी प्रसाद द्विवेदी'** जी ठीक ही लिखा है कि –**' रीतिकाल के कवियों में शब्दालंकार के प्रयोग बहुत है, लेकिन अधिकतर वे काव्य के घटिया प्रभाव को उत्पन्न करके रह जाते हैं, अर्थ की बाह्य सत्ता से उनका जितना संबंध होता है, उतना रमणीयता का ध्यान बराबर रखा हैं। इसीलिए उनके शब्दालंकार रसोद्रेक के सहायक होकर आते है। परवर्ती काल के कम कवियों में यह गुण पाया जाता है।'**

सहायक पुस्तके (1) हिन्दी साहित्य का इतिहास–(आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

(2)बिहारी सतसई (बिहारी रत्नाकर)